रविवार 9-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा और वरसा याद है?

कोई अनुभव सुनाते हैं, कोई सर्विस-समाचार सुनाते हैं। बच्चे यहां जो समझते हैं अनुभव सुनाते हैं। फिर अपने सेन्टर पर भी अनुभव सुनाते हैं। अनुभव बहुत खुशी उमंग से सुनाना होता है। मधुबन में बाप से क्या2 नई बातें सुनी। आते भी हैं इस ख्याल से हम बाबा के पास जाते हैं। बापदादा, है तो दोनो बाबा ना। यह भी बड़ा बाबा। इनको तो ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर भी कहते हैं। उनको फादर कहते हैं। होकर गया है जरूर। जो चीज़ हो जाती है वह फिर रिपीट करते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा रथ में आया था। पास्ट हो गया। रथ मशहुर है। रथ पर सवार हो आते हैं। सो तो जरूर मनुष्य के रथ पर आवेंगे। तुम बच्चों को मालूम पड़ा बाप इस रथ में आते हैं। कृष्ण की आत्मा नहीं आवेगी। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अन्त में है। तो उनको कृष्ण नाम नहीं कहेंगे। यह तुम बच्चों ने समझा है कृष्ण को श्याम और सुन्दर भी क्यों कहते हैं। नाम तो मनुष्य भी रखाते हैं। परन्तु हिस्ट्री का किसको भी पता नहीं है। कृष्ण गौरा पावन, सांवरा पतित। कृष्ण के भक्त सुनेंगे तो बिगर पड़ेंगे। उल्टा-सुल्टा बोलने लग पड़ेंगे। बड़ा युक्ति से समझाना है। जैसे तुम गवर्नर पास गये। बाप ने समझाया पहले2 यह समझाना है ऊंच ते ऊंच भगवान निराकार है। निराकार आत्मा तो सभी हैं। निराकारीभव। अपने को निराकार आत्मा समझो। वह निराकार परमात्मा। सदैव परमधाम में रहते हैं। परमधाम में रहने वाली परम-आत्मा। बाकी आत्मायें तो तुम सभी हो। अपने2 शरीर में पार्ट बजाते हो। जो भी आत्मायें हैं सभी अविनाशी हैं। तुम कहते भी हो हर 5000 वर्ष बाद हम बाप से वही वरसा लेते हैं जो कल्प2 लेते हैं। यह है हद का ड्रामा। यह है बेहद का ड्रामा। सन्यासी हद का सन्यास करते हैं। रहते फिर भी पुरानी दुनिया में हैं। तुम बच्चे जानते हो सम्बन्धी आदि हैं परन्तु ममत्व निकल जाता है। बुधि का योग उस तरफ लग जाता। बाप को याद करते करते सतोप्रधान बनना है। बेहद के बाप से बेहद का वरसा भी लेना है नई दुनिया का। इसलिए पवित्र जरूर बनना है। बच्चे आज्ञा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मानते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई भी देहधारी को याद न करो। बाप को याद करो। गवर्नर को भी समझाना पड़े। बाप कहते हैं मुझ बाबा को याद में रहने से तुम पावन बन जावेंगे। ऊंच ते ऊंच पतित-पावन बाप कहते हैं मुझे याद करो। म्युजियम आदि में सुनते तो बहुत हैं। समझते नहीं। आगे चल कर वहभी सुनने सुनाने लग पड़ेंगे। सतयुग त्रेता में जो संख्या होती है वह आवेंगे। आकर सुनेंगे। जब तक ब्राह्मण न बने हैं देवता बन न सके। पिछाड़ी के समय बहुत आवेंगे। बच्चों को थोड़ी तकलीफ सहन करनी पड़ती है बान्धेलियों को। यहभी धीरे2 बन्धन टूटते जावेंगे। अखबार आदि में सुना है यह जादू डालते हैं। भगवान को जादूगर कहा जाता है ना।

उनके सिवाय इतने बच्चों को कौन सम्भाल सकते हैं। दिन प्रति दिन टाईम कम हो जाता है। प्रजा बहुत बनानी है। नहीं तो राजा कैसे बनेंगे। राजा वह बनेंगे जिन्हों ने रईयत बनाई है। रईयत का राजा तो बनेंगे ना। कोशिश करनी चाहिए अपनी पढ़ाई की। सन्यासियों का है हद का त्याग। तुम्हारा है बेहद का त्याग। सन्यासियों को भी सुख है बहुत है पैसे का। प्यार करते हैं, घर में बुलाते हैं। वहां तो ऐसी बातें नहीं। साधु सन्यासी आदि को भी घर को भी घर में बुलाया जाता है। वह ज्ञान नहीं। वह है भक्ति। अभी बच्चे जानते हैं हमको सभी भूल जाना है। अभी घर जाना है। मुशकिल पूरी हुई। पहले मुशकिल तो अपने राज्य में करते हो। फिर पराये राज्य में आने से दुःख होता है। छी छी दुनिया है ना। इस दुनिया में मनुष्यों को अनेक प्रकार की फिक्रात है। सतयुग में कोई भी फिक्र की बात ही नहीं। फिक्र से फारग अभी होनापड़े। फिक्र से फारग हो शरीर छोड़ेंगे तब ऊंच पद पावेंगे। मददगार जो बनते हैं उनको हिस्सा बहुत अच्छा मिलता है। विश्व की राजाई में तुम सभी हिस्सेदार हो। परन्तु जो जितनी मेहनत करेंगे उतना ही हिस्सा। सारा मदार पुरुषार्थ पर रहता है। बाप को पहचानते हैं समझते हैं। बाप वरसा देने आये हैं। तो उस पढ़ाई से दिल हट जानी चाहिए। याद की यात्रा बहुत टाईम लेती है। बाप सिखलाते हैं। ऐसे ऐसे करो। इम्तहान के दिनों में बहुत मेहनत

करते हैं। आगे चल कर जोर से पुरुषार्थ करेंगे। अभी शरीर छूट जाये तो। कोई भी बात पर ठहरना न है। ऐसे=बड़ी नहींटाईम पड़ा है। ऐसा कच्चा न बनना चाहिए। बच्चों कोश्रीमत पर ध्यान देना है। ब्रह्माको आयु 100 वर्ष कहते हैं। 60 वर्ष मे बाप ने प्रवेश किया। बाकी 40, उन में भी तुमकितना पुरुषार्थ करते आये हो। 32 वर्ष। बाकी जाकर आठ वर्ष रहा है। टाईम भी एक्युरेट आठ वर्ष हो रहते हैं। छोटा झाड़ है वृधि होती जाती है।

मीठे-मीठे बच्चों को बाप को याद करना है अच्छी रीत। रात को सोते भी याद में। खुशी होगी। फिर फालतू संकल्प आद नहीं आवेंगे। थकावट है तो लेट जाओ। उठते-बैठते, चलते-फिरते प्रैक्टीस करो तो तुमको बहुत अच्छा लगेगा। जैसे लौकिक बाप के लवली बच्चे होते हैं तो प्यार करते हैं। क्योंकि बच्चे बाप की बहुत खातरी करते हैं। यहां बच्चों को बाप की खातरी यह करनी है। मदद करनी है सभी को कहो बाप को याद तो वरसा मिलेगा। सतोप्रधान बनना माना वरसा लेना। यहां रहनेसे पुरानी दुनिया बिल्कुल याद न रहनी चाहिए। घर और बाप। दो अक्षर है ना। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यारगुडनाईट। नमस्ते।

रात्रिक्लास 10-7-68 :- बच्चों को बेहद का बाप बेहद को बहुत मीठी2 बात सुनाते हैं जो और कोई सुना न सके। शास्त्र आद तो जन्म-जन्मान्तर सुनते आये हैं। बेहद का बाप बिल्कुलनई बात सुनाते हैं। इसलिए मनुष्य मुंझते हैं। बच्चों को समझाया गया है यह नालेज कोई शास्त्रों आद में नहीं हैं। भल है गीता। परन्तु वह भक्ति-मार्ग की गीता नहीं। उनको राजयोग कहा जाता है। सुनाने वाला है नया तो जरूर नई बात ही सुनावेंगे। बिचारे मनुष्य तो समझ न सके। तुम बच्चे समझते हो बाबा हर 5000 वर्ष बादयह बातें सुनाते हैं। यह बात कोई जानता नहीं। वह जो कुछसुनाते हैं वह मनुष्य खुद पढ़ सकते हैं। जो सन्यासी पढ़कर सुनाते हैं वह गृहस्थी भी पढ़ कर सुनाते हैं। हो वेद-उपनिषद गीता आद। घर में भी गीता आद पढ़ेंगे। नाम तो गीता है ना। पहले पहले ही सुनाते हैं यदा यदा कि धर्मस्य ..... बाप तो कहते हैं मैं तुम्हारा बाप हूं। तुम भूल गये हो। शिव बाबा आते हैं तो जरूर बेहद की बादशाही स्वर्ग देंगे। स्थापना करने वाला ही वह है। बेहद का बाप बेहद का वरसा देंगे। स्थापना करने वाला ही वह है। बेहद का बाप बेहद का वरसा देते हैं नहीं तो सूर्यवंशी देवी-देवताओं की राजधानी किसने स्थापन की। ऐसे नहीं राधे-कृष्ण ने स्थापन किया। नर से नारायण बनाने लिए, नारायण वा कृष्ण को नहीं आनाहै। जब कि है ही सतोप्रधान दुनिया। बच्चों को बहुत सहज लगना चाहिए। फिर भी 40 वर्ष मिलते हैं समझाने लिए। बाप कहते हैं दिन प्रति दिन गुह्य गुह्य बातें सुनाता हूं। पहले वाली बातें इतनी गुह्य नहीं थी। हम भी समझते समझते आये हैं। करांची में 14 वर्ष रहे। 14 वर्ष वनवास में रहे। अभी मीठे2 बच्चे समझ गये हैं जब शिव बाबा आते हैं तो स्थापना करते हैं। विनाश भी जरूर कराते हैं। जब स्थापना हो उसके बाद विनाश होगा। वास्तव में 40 वर्ष लगते हैं। शास्त्रों में ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु। तो शिव बाबा 60 वर्ष में आये। 40 वर्ष तुमको लगे। आठ वर्ष भी अभी बहुत दिखाई पड़ती है। समझते हैं विनाश जल्दी होना है। तैयारियां ऐसी हुई पड़ी है। डिक्लीयर कर चुके हैं। ऐसे बनाये हैं जो ऐसे करने से ही खत्म हो जावेंगे। इन से नई खोपनाक चीज़ अभी बनाते नहीं हैं। विनाश भीदेखा स्थापना भी देखी है। तो निश्चय भी होता है। सर्विसबहुत करनी है। पैगमा पहुंचाना है गांव गांव में। यहां कहते हैं फलाने जगह सेन्टर खोलो सेन्टर नहीं है? हम निमंत्रण देते हैं' अभी तो बरसात है' बरसात पूरी होने बाद फिर जावेंगे। निमंत्रण बहुत मिलते हैं' सिर्फ बच्चियां तैयारनहीं हैं। माताओं को पति से छुट्टी नहीं मिलती है। फिर कन्याओं को कहा जाता हैतुम ही खड़ी हो जाओ। सर्विस पर माताएं कम निकलती हैं। क्योंकि बन्धन में हैं। सतयुग में है पवित्रदुनिया। यह है पतित दुनिया। कहती हैं बाबा शादी के पहले क्यों नहीं आये? तो हम फंसते नहीं थे। ऐसे डोराफेंकते हैं। बाबा बच्चा न होता तो भी बन्धन मुक्त

होते। बाबाकहते यह ड्रामा की भावी है। राय दी जाती है परन्तु पुरुष लोग जब समझे ना। समझते ही नहीं। यह रावण राज्य है, बेसमझों की दुनिया। बेसमझ मंदिर में समझदार आगे जाते हैं। मंदिर के आगे हाल लेकर भाषण करो। तुमको यह बनाते हैं आकर समझो। यह लक्ष्मी-नारायण समझदार थे सो अभी बेसमझ बने हैं। फिर जरूर वह राज्य करेंगे। आवेंगे, कोई ने राज्य छीना है। यहाकसको पता नहीं है। देवताओं से राज्य किसने छीना ? माया रावण ने। बाप ने यह कथासुनाई है। रावण ने छीना है फिर मैं आया हूं रावण पर जीत पहनाने। तो शिवशक्ति सेना में दाखिल हो जाना चाहिए। हम अपना राज्य स्थापन करें या टाईमवेस्ट करें। याद की यात्रा में ही माया के विघ्न पड़ते हैं। यहराजयोग है। सन्यासी सिखला न सकें। बाप सिखला रहे हैं। एमआबजेक्ट ही यह है। हम विश्व में शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं। भारतवासी यह ही मांगते हैं' चित्र कितना अच्छा बनाया हुआ है। 6×9 साईज के चित्र ट्रान्सलाईट को हो तो बहुत अच्छा। कहते हैं छत इतनी बड़ी नहीं है। 10" से कम छत होती नहीं। अच्छा नहीं सही तो 6×4 का बनाओ।

तुम बच्चे जानते हो कि हम पढ़ रहे हैं। हमारे लिए नई दुनिया जरूर चाहिए। इसलिए हर 5000वर्ष बाद ही लड़ाई लगती है। बच्चों के सामने एमआबजेक्ट खड़ी है। और स्वदर्शनचक्र चलाना है। बस। विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखलाते हैं ना। 'बेहद का बाप मिला है तो खुशी बहुत होनी चाहिए। झट हाथ का बन जाना चाहिए। न बने और कल शरीर छूट जाये तो बस्ता मिल न सके। कितनी नाजुक बातें हैं' पीछे पर तो भरोसा नहीं। गाते हैं ना सिमर सिमर सुख पाओ। बाप को सिमर सुख पाओ। कल-कलेश मिटे सब तन के।2। जन्मों के लिए सभी बिमारियां खत्म हो जावेंगी। जीवन मुक्ति पद पाओ। गायन भी है ना तकलीफ की बात नहीं। बेहद के बाप को सिर्फ याद करना है। टाईम वेस्ट बिल्कुल न करना है। कन्याओं को नौकरी करना तो कायदे के बिरुद्ध है। बाप कहते हैं तुमको अभी नौकरी करनी नहीं है। यह सेवा करनी है। मनुष्य को हीरे समान बनाना है। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। स्वर्ग और नर्क में तो बहुत फर्क है। वह है शिवालय। यथा राजारानी तथाप्रजा पवित्र। तुम कल्प कल्प बनते हो। कल्प पहले मिसल ही बाप पुरुषार्थ कराते हैं। कौड़ियों पिछाड़ी टाईम वेस्ट मत करो। मैं आया हूं पदमा-पदमभाग्यशाली बनाने। तो रहम पढ़ता है। अभीटाईम बहुत अच्छा है। प्राईम मिनिस्टर भी फिट्ट है। उनको समझाना चाहिए। फिट्ट स्वर्ग की स्थापना कर रही है द्वार खोल रही है। तो मदद करनी चाहिए। बन्देमातरम् है ना। पहले उनको अच्छी रीतपकड़ना चाहिए। माताओं को ही कलश मिला था। तो ऐसे राय निकाल लिखना चाहिए। माताओं को अमृत का कलश मिलता है भारत को फिर से स्वर्ग बनाना। एक आदी सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापन करने लिए। अभी हमको मदद करो तो तुम भी ऊंच पद पा सकते हो। ऐसी2 युक्ति से लिखते रहो। फिर कह सकेंगे तुम ने सुना नहीं। माताओं को बड़ी सही हो। माताएं ही माताएं' ज्ञानामृत के कलश से हम हरेक को पवित्र बनाते हैं' यहपुरुषोत्तम संगम युग है। अपना भी कल्याण करना है। औरों का भी करना है। न करेंगे तो आगे ही पछतावेंगे। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानीबच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।